Unit - II

Date / /
Page No.
Shivalal

राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती एवं स्वामी विवेकानन्द

★ राजा राम मोहन राय के सामाजिक विचार

राजा राम मोहन राय ने सामाजिक सुधार के लिए ब्रह्म समाज की स्थापना की। ब्रह्म समाज के माध्यम से उन्होंने समाज में विद्यमान विभिन्न कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। राजा राम मोहन राय के द्वारा जो सामाजिक सुधार किए गये वो निम्न प्रकार है।

1- अंग्रेजी शिक्षा - राजा राममोहन राय का मत था कि भारत की उन्नति के लिए अंग्रेजी शिक्षा आवश्यक है। इस अंग्रेजी शिक्षा को अपनाने के लिए उन्होंने एक अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की। इसी के साथ उन्होंने भारत की उन्नति के लिए पाश्चात्य शिक्षा पद्धति पर जोर दिया। उन्होंने इस बात का भी प्रयास किया कि शिक्षा अंग्रेजी माध्यम द्वारा ही प्रदान की जाती है।

2- मूर्ति पूजा - राजा राम मोहन राय मूर्ति पूजा के विरोधी थे। उनका एकेश्वर में अटूट विश्वास था। एकेश्वर वादी एवं मूर्ति पूजा के विरोधी होने के कारण हिंदुत्व में वेदांत में आश्चर्य प्राप्त हो सकता है।

राजा राममोहन राय का यह विश्वास था कि मूर्ति पूजा अगर समाप्त हो जाए तो इससे संबंधित अन्य अंध विश्वास एवं कुरीतियां स्वयं समाप्त हो जाएगी।

3- सती प्रथा का विरोध - राजा राममोहन राय का नाम सती सुधार आंदोलन के लिए जाना जाता है। उन्होंने रचनाओं द्वारा इस प्रथा के विरुद्ध जनमत बनाने का प्रयास किया। राजा राममोहन राय ने शास्त्रों के आधार पर अपनी तार्किक बुद्धि के द्वारा प्रमाणित कर दिया कि सती प्रथा न तो धार्मिक दृष्टि से उचित है न ही मानवतावादी दृष्टिकोण से है।

4- बहुपत्नी प्रथा - राजा राम मोहन राय ने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया कि यह प्रथा हिन्दू कानून के विरुद्ध है। एक पत्नी के होते हुए दूसरी पत्नी किन्हीं विशेष परिस्थितियों में आ सकता है। उन्होंने शास्त्रों के आधार पर कहा कि कोई पुरुष एक स्त्री के रहते हुए दूसरी स्त्री से विवाह नहीं कर सकता है।

5- नारी जागृति - राजा राममोहन राय का सर्वप्रथम ध्यान स्त्रियों के उत्थान की ओर गया। सती, बाल विवाह निषेध, बहुपत्नी विवाह आदि इसके अंतर्गत है।

Date / /
Page No.

★ राजा राम मोहन राय के राजनीतिक विचार

राजा राम मोहन राय एक उच्च कोटि के राजनीतिक विचारक थे। भारत में सामाजिक एवं राजनीतिक नव चेतना जाग्रत करने के कारण ही उन्हे आधुनिक भारत का राजनैतिक संदेश वाहक कहा जाता है। राजा राममोहन राय आधुनिक भारत के संवैधानिक उदारवादी आंदोलन के अग्रदूत थे।

* राजा राममोहन राय एक राजनीतिक नहीं थे लेकिन इन्होंने भारत तथा यूरोप की राजनीति, राजनीतिक संगठनो तथा संस्थाओं के व्यवहार का गहन अध्ययन किया। वे प्रयत्क्ष एवं अप्रयत्क्ष ज्ञान के आधार पर भारत की राजनैतिक स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना चाहते थे।

* वह पश्चिम की संसदीय, लोकतंत्रीय प्रणाली के समर्थक थे। और वे चाहते थे कि भारत भी इस प्रणाली को अपनाये। यह प्रणाली जनता द्वारा तथा भारत के लिये शासन की परिचायक थी।

* राजा राममोहन राय स्वतंत्रता आंदोलन के नरम दलीय उदारवादियों के अग्रणी थे। क्योंकि उनकी तरह उनकी वरीयता (Importance) भी अच्छा शासन की थी।

* स्वशासन प्राप्ति के लिए राजा राममोहन राय ~~यूर~~ यूनानी विचारक प्लेटो की भाँति शासन

एवं शासकों के बीच घनिष्ठ सम्बंध को बहुत ~~महत्वपूर्ण~~ अनिवार्य मानते थे।

- राजा राममोहन राय ऐसी शासन व्यवस्था चाहते थे जिसमें सभी लोग अधिकृत विधायकों द्वारा पारित कानूनों द्वारा शासित हों न कि किसी स्वेच्छाचारी शासक द्वारा। वह लोगों को शान्तिपूर्ण एवं संवैधानिक तरीकों द्वारा सरकार को चुनौती देने तथा उसका विरोध करने, उसके साथ सहयोग करने, एवं उसकी अवज्ञा करने, बार-बार प्रत्यनों के बावजूद भी यदि सुधार लाना असंभव हो जाये तो राजनीतिक परिवर्तन के अधिकार की भी वकालत करते हैं।

★ दयानन्द सरस्वती के राजनीतिक सम्बंधी विचार

दयानन्द सरस्वती ने केवल ईश्वर की सत्ता के अतिरिक्त किसी लौकिक सत्ता को स्वीकार नहीं किया। दयानन्द ने राज्य के समाप्त होने के लिए कभी भी कल्पना नहीं की। साथ ही उन्होंने राजनीति में विरोधी दल की आवश्यकता तथा महत्व पर विचार नहीं किया।

- दयानन्द संन्यासी होने के कारण केवल भगवान को ही सर्वसम्पन्न मानते थे। दयानन्द दैनिक कानून के पालन और राजनीतिक प्रभु के कानूनों के मध्य में प्रथम

घनिष्ठ संबंध रहा। उन्होंने धर्म एवं राजनीति का जो समन्वय किया वह अन्य कहीं नहीं मिलता। उन्होंने शिक्षा, राजनीति और धर्म पर सुधार से सम्बंधित दृष्टिकोण पर जोर दिया। उनके योगदान को निम्न तथ्यों के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है।

1- कुरीतियों एवं अंधविश्वासों का विरोध - स्वामी दयानंद सरस्वती के राष्ट्रीय आंदोलन में सम्मिलित होने से पूर्व भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। भारत के लोग गुलामी को अपने पूर्व जन्म में किए गए पापों का फल समझते थे। और वे समझते थे कि यह गुलामी हमें वरदान स्वरूप प्राप्त हुई है। लेकिन दयानंद सरस्वती ने आकर उन्हें बताया कि उनकी धारणा बिल्कुल गलत है। ये अंग्रेज बहुत ही अत्याचारी हैं और तुम पर राज्य कर रहे हैं और तुम्हारा शोषण कर रहे हैं। इस प्रकार से उन्होंने भारत वासियों को इन तथ्यों से अवगत कराया। इसके साथ ही अन्य रीति-रिवाजों, मूर्ति पूजा आदि पर अपने द्वारा शब्दों से प्रहार किया।

2- राष्ट्रवादी एवं राष्ट्रीय चेतना की जागृति - स्वामी दयानंद सरस्वती ने राष्ट्रीयता की एक अग्रदूत के रूप में बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने उस राष्ट्रीय विचारधारा को जन्म दिया जिसका चरम सीमा

Date / /
Page No.

शासन के संबंध में अपने विचारो से ज्यादा सहमत थे।

3- न्याय के सम्बंध में विचार- दयानंद वह पहले व्यक्ति थे जिन्होने सुराज्य के साथ न्याय राज्य पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार जिस राज्य में अन्याय है वह राज्य बहुत अधिक समय तक स्थिर नहीं रह सकता। दयानंद के अनुसार न्यायकर्ता को किसी भी तरह से पक्षपात नहीं करना चाहिए। और साथ ही कभी-भी अन्याय नही करना चाहिए जब तक पूर्ण तथ्यो की जानकारी न हो। न्याय करना उचित नहीं है।

4- दंड के सम्बंध में विचार - दयानंद सरस्वती ने संयासी होते हुए भी पूर्ण अहिंसा के विचार को मान्यता नहीं दी बल्कि उन्होने राजनीतिक मामलो में दंड व्यवस्था की अनिवार्यता को स्वीकार किया। एंव साथ अपराधियो को शारीरिक दंड दिये जाने का समर्थन किया।

★ राष्ट्रीय आंदोलन सम्बन्धी योगदान

स्वामी दयानंद सरस्वती का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत के धार्मिक एंव सामाजिक आंदोलन और भारत की राजनीति के साथ उनका

को अधिक महत्व देते हैं। दयानंद ने कुछ महत्वपूर्ण विचार ~~और~~ और भी दिए। जिनका विवरण निम्न प्रकार है।

1- राजा के संबंध में विचार - दयानंद का राजा वंश परंपरागत को ही व्यक्ति नहीं है बल्कि प्रजा द्वारा नियुक्त सभा का सभापति है। ~~वह~~ वंश परंपरागत होने वाला राजा भी सभा की अनुमति को लेने के लिए बाध्य है। दयानंद जी का विचार है कि प्रजा को ही राजा की नियुक्ति का अधिकार है। इस प्रकार कि राजनीतिक व्यवस्था में राजा कोई भी गलती नहीं कर सकता।

दयानंद ने ~~इस~~ राजा और प्रजा के पारस्परिक संबंधो का भी उल्लेख किया है वे प्रजा सम्पति को मान्यता प्रदान करते थे। इस प्रकार दयानंद ने राजा के अपने कर्तव्यो के उत्तरदायित्व को पूर्ण करने के लिए आग्रह किया है।

2- वोट देने (संपत्ति) के सम्बंध में विचार-

आचार्य दयानंद का विचार था कि जिसको वोट देने का ज्ञान नहीं उसको वोट को देने से सम्बंधित विचार से निर्वाचित प्रत्याक्षी का देश के संबंध में हित नहीं हो सकत उनके लिए मत का अत्यधिक महत्व था। इससे स्पष्ट है कि दयानंद बहुमत के